SHANKARA'S THEORY OF WORLD

शंकर का जगत-विचार ।

By- Dr. Arun Kumar Sinha
Asso. Professor, Philosophy Department
Raja Singh College, Siwan
(For Part- 1 Hons./Subs. Students)

शंकर ने विश्व को पूर्णतःसत्य नहीं माना है।शंकर के अनुसार ब्रह्म ही एकमात्र सत्य है और शेष सभी वस्तुएं जैसे- ईश्वर, जीव, जगत सभी प्रपंच है। शंकर के दर्शन की व्याख्या इन शब्दों में की गई है - "ब्रह्म सत्यं जगत मिथ्या जीवो ब्रह्मैव नापरः", अर्थात ब्रह्मा एक मात्र सत्य है जगत मिथ्या है तथा जीव और ब्रह्म अभिन्न हैं। जगत को शंकर माया मात्र मानते हैं । वह रस्सी में दिखाई देने वाला सांप के तुल्य मिथ्या है। वह सांप जादू की तरह असत है।लेकिन असत् होने पर भी यह जगत बंध्या पुत्र की तरह नितांत असत नहीं है। ये वास्तविक अस्तित्व नहीं रखते और न मायावश ही अस्तित्व रखते हैं।जगत प्रतिभासिक सत्ता (illusion)नहीं है।भ्रम नितांत निराधार नहीं होते,व्यवहारिक वस्तुएं उनके आधार होते हैं। रज्जू-सर्प रज्जू पर आश्रित होता है जोकि अविद्या के कारण सर्प के रूप में दिखाई देती है। मृगतृष्णा बालू के रूप में सत होती है जो अविद्या के कारण पानी के रूप में दिखाई देती है। रस्सी और बालू व्यवहारिक वस्तुएं हैं भ्रम बिल्कुल निरालंबन नहीं होते। व्यावहारिक वस्तुएं उनके आधार होती हैं। भ्रम व्यावहारिक वस्तुओं का गलत ज्ञान है रस्सी भ्रम वश सांप समझ ली जाती है। खंभा आदमी समझ लिया जाता है। बालू पानी समझ लिया जाता है।

शंकर के अनुसार सम्पूर्ण जगत ब्रह्म का विवर्त मात्र है।विवर्तवाद कार्य को कारण का आभासिक रूपांतरण मानता है अर्थात कारण वास्तविक है, कार्य नहीं। वास्तविकता में कारण रूपांतरित होता ही नहीं है वह रूपांतरित होता हुआ दिखता है।यह संदेह या विपर्यय होता है। यह केवल आभास होता है। विवर्त मात्र है। आरंभवाद का समर्थक न्याय-वैशेषिक दर्शन होता है, परिणामवाद को स्वीकारने वालों में सांख्य दर्शन और विशिष्टद्वैत वेदांत दर्शन है। विवर्तवाद की कल्पना अद्वैत वेदांत दर्शन की है।

शंकर का मानना है कि सत्ताएँ तीन प्रकार की होती हैं : -

1 प्रातिभासिक सत्ता(Apparent existence)

2 व्यवहारिक सत्ता(Practical existence)

3 पारमार्थिक सत्ता(Supreme existence)

प्रातिभासिक सत्ता वह है जिसका अस्तित्व क्षण भर के लिये होता है जैसे--स्वप्न, भ्रम आदि। इनका खंडन जाग्रत अवस्था के अनुभवों से हो जाता है।

व्यावहारिक सत्ता वह होती है जिसका खंडन किया जा सकता है जैसे -संसार।ये हमारे जाग्रत अवस्था में सत्य प्रतीत होते हैं।ये तार्किक दृष्टिकोण से खंडित होने की क्षमता रखती हैं इसलिए इन्हें पूर्णतः सत्य नहीं माना जा सकता।

पारमार्थिक सत्ता वह कहलाती है जिसका कभी विरोध नहीं हो सकता। यह अव्यपातक होता है।अव्यपातक सत्ता ही एकमात्र वास्तविक सत्ता होती है।यह सत्ता ही परब्रह्म है।

शंकर ने माना है कि जगत को व्यावहारिक सत्ता में रखा जा सकता है। जगत व्यावहारिक दृष्टि से पूर्णतः सत्य है।इसे शंकर भ्रम और स्वप्न की तरह न पूर्णतः मिथ्या मानते हैं और न सत्य।यह तभी असत्य होता है जब इसकी व्याख्या पारमार्थिक दृष्टि से की जाती है।जगत शंकर के अनुसार माया का विवर्त या अध्यास है। जगत के सभी सापेक्ष चीजों का अस्तित्व हमेशा नहीं बना रहता वे पदार्थ अनित्य तथा क्षणिक होती हैं उनका स्वभाव विरोधी होता है। इसलिए उन्हें सत्य नहीं कहते हैं।सत्य नित्य तथा अव्याघाती होता है। वह अपरिवर्तनशील एवं अपरिणामी होता है। लेकिन संसार की सभी वस्तुएं परिवर्तनशील और परिणामी होती हैं। सत्य दिक एवं समय से परे होता है। जगत की वस्तुएं दिक तथा समय से घिरी होती हैं। सत्य अविनाशी होता है पदार्थ विनाशी होते हैं। इसी कारण जगत को मिथ्या कहा जाता है। अद्वैत वेदांत में मिथ्या का एक विशेष अर्थ लिया गया है और वह खंडित सत्य कहलाता है।